

पद्मा मिश्रा

रामचरितमानस में नारी के विविध स्वरुपों का चित्रण

गीत तुलसी ने लिखे.तो आरती सबकी उतारी
राम का तो नाम है.गाथा.कहानी है हमारी

सचमुच तुलसी ने रामकथा का सृजन कर संपूर्ण मानवता को सुपथ दिखलाने एवं समाज कल्याण हेतु श्रेष्ठ कार्य किया है।इस दृष्टि से रामचरितमानस का हिंदी साहित्य में विशिष्ट योगदान है। समाज धर्म, राजनीति और नारी विमर्शों की बात हो या सामाजिक संबंधों की एक अनूठी परिभाषा देने की बात हो,मानस ने जीवन के हर पहलू को छुआ है। जहां तक नारी विमर्श एवं पारिवारिक व सामाजिक जीवन में उनके अमूल्य योगदान की बात हो, गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस के नारी पात्रों के माध्यम से उन्हें सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया है। मानस के नारी पात्रों की भूमिका मानस की मनोभूमि के निर्माण में सशक्त होकर उभरी है।सीता, कौशल्या,सुमित्रा, कैकेई,,या उर्मिला, मंदोदरी, त्रिजटा, और तपस्विनी शबरी हो,सभी ने अपनी भूमिका के साथ न्याय किया है।, परंतु विशेष रुप से शबरी.सीता.उर्मिला मांडवी के चरित्र ने मुझे बहुत प्रभावित किया जिनका संवेदनशील चरित्र वर्तमान संदर्भों में भी अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक जान पड़ता है। मानस के समस्त नारी पात्र, विशिष्ट गुणों से युक्त है, संवेदनशील है और करुणा दया सेवा से भूषित है। उन्होंने एक आदर्श प्रस्तुत किया है। समाज के सम्मुख,चाहे वह सीता हो मंदोदरी या मांडवी, अहिल्या हो या कैकेई शबरी त्रिजटा जैसे अनेक नाम है जो आदरणीय और प्रतिष्ठित है। सर्वप्रथम यदि जगतजननी सीता को स्मरण करें तो वह एक आदर्श नारी उत्तम गुण शील चरित्र की वाहिका मानस की महानतम महिला पात्र है जो अपने व्यक्तित्व एवं गुणों से विश्व की समस्त महिलाओ के लिए आदर्श तथा त्याग व समर्पण की प्रतिमूर्ति बन गई। सीता के जीवन मूल्य और संस्कार अप्रतिम थे । पितृगृह की सर्वप्रिय पुत्री जनकनंदिनी अपनी समस्त चंचलता चपलता भूलकर पति गृह में अनुशासित स्नेहमयी सेवाभावी कुलवधू में परिवर्तित हो सभी अनुजवत देवरों को मातृवत् स्नेह प्रदान करती हैं। ससुराल और मायके की मर्यादा को समझने वाली धीरमति स्त्री हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में धैर्य एवं बुद्धिमत्ता का सहारा लेती हैं। वहीं **शबरी** शूद्रा होते हुए भी राम के प्रति एकनिष्ठ भक्ति और प्रेम की त्याग समर्पण भरी भावनाओ से एक आदर्श प्रस्तुत करती है। क्योंकि वह दयालु है करूणामयी है तभी अपने विवाह में पिता के द्वारा अतिथियों के सत्कार हेतु निरीह पशुओं की बलि से द्रवित होकर वह रातोंरात वन प्रांतर में भागकर ऋषि के द्वारा निर्देशित राम के आने की प्रतीक्षा करती है। कुटिया और द्वार सजाती है कि राम आयेंगे और उसे
मोमोक्ष की प्राप्ति होगी।यहां पर गोस्वामी तुलसीदास जी ने शबरी के जूठे बेर खिलाने की घटना से समाज में.व्याप्त छुआछूत की भावना को विनष्ट करने की सुंदर कोशिश की है।और इस परिवर्तन का सूत्रधार भी एक नारी को ही बनाया है।

आज समाज में जहां धर्म एवं जातियों का चक्रव्यूह सामाजिक नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं,मूल्यों को विनष्ट कर रहा है,,नारी सम्मान एवं उनके सशक्तिकरण का ज्वलंत प्रश्न हाशिए पर हैं,, वहां तुलसी दास जी की लेखनी ने तपस्विनी शबरी एवं राम के उदात्त चरित्र के माध्यम से पथभ्रष्ट समाज को एक नया मार्ग दिखाया है कि नारी किसी भी वर्ग या जाति की हो वह सदैव पूजनीय है, उसका ममत्व कभी दूषित नहीं हो सकता,।

ऐसे अनेक उदाहरण रामचरितमानस में मिलते हैं जहां नारी अपने उदात्त गुणों से समाज की पथप्रदर्शक बनी है.उसे प्रगति. कल्याण का सन्मार्ग दिखाया है।

तुलसीदास जी ने नारी के प्रति मानस को अत्यंत संवेदनशील. सहयोगी और सामंजस्य स्थापित करने वाला बताया है क्योंकि तत्कालीन समाज की निर्धनता एवं शासन के उत्पीड़न से दबी जनता अपने सुख और समरसतापूर्ण जीवन के लिए नारी से यह अपेक्षा रखती थी कि वह अपना अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम हो। जिसके लिए परिवार में सहयोग, शान्ति और समरसता का भाव हो। इस भाव को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक था कि वह पति की अनुवर्ती के रूप में अपना जीवन निर्वाह करे।

पति की आज्ञा का पालन करना, सन्तानों का लालन-पालन करना, गृह-कार्य का विवेकपूर्ण निष्पादन करना आदि अपेक्षाएँ उस काल की स्त्रियों से की जाती थी|.जैसा **उर्मिला और मांडवी ने** किया .लक्ष्मण के राम के साथ वन जाने पर पति की यादों को संजोये पतिगृह की देखभाल करती है और स्वयं भी एक तपस्विनी का जीवन व्यतीत करती.है|वहीं मांडवी सत्ता के समस्त सुख उपलब्ध होने पर भी उनके भोग की कामना नही करती|

मानस.में स्त्रियोचित सम्मान. आदर.संबधो की गरिमामय स्थापना का आदर्श प्रस्तुत किया गया.है|बालि वध के उपरांत बालि ने प्रभु राम से प्रश्न किया , **मै वैरी सुग्रीव पियारा,कारन कवन नाथ मोहिं मारा ?** तब राम का उत्तर नारी सम्मान और उनकी गरिमा की दिशा में प्रेरक है-.अनुकरणीय है|

अनुज वधू भगिनी सुत-नारी*
सुन शठ कन्या सम ए चारी .
इनहिं कुदृष्टि विलोकत जोई.
ताहि वधू कुछ पाप न होई

मानस के.समस्त नारी पात्र अपने तमाम अवगुणों. गुणों के बावजूद एक आदर्श की स्थापना करती नजर आती.हैं.

घर-परिवार के सभी धार्मिक अनुष्ठान उन्हीं के द्वारा सम्पन्न होते थे| सास-ससुर, देवर-भाभी, ननद-भौजाई आदि सम्बन्धों के भी उचित निर्वहन का दायित्व उनके ऊपर था.|.यद्यपि मानस में.वर्णित एक चौपाई ने उन्हें विवादग्रस्त भी बनाया है .

ढोल गंवार. शूद्र पशुनारी. सकल ताडना के अधिकारी के अर्थ का अनर्थ कर उसकी आलोचना भी की गई है कि मानस में तुलसीदास जी ने नारी को हीन प्रताड़ना के योग्य माना .है..जो कि सर्वथा गलत. तथ्यहीन और प्रलाप मात्र है|उसी मानस में जहां तुलसी ने **जिय बिनु देह नदी बिनु वारी. .तैसिय नाथ पुरुष बिन नारी** कहकर नारी को पुरुष के जीवन में महत्वपूर्ण बताया है उनसे ऐसी रचना की आशा भी कदापि नहीं की जा सकती|इसके विपरीत बडो की बात काटने वाली, निर्लज्जतापूर्वक रहने वाली, कलहकारिणी, अविवेकी, दयाहीन, हठवादी स्वभाव की स्त्रियाँ समाज के लिए अभिशाप मानी जाती थीं और इन्हीं सद्गुणों एवं दुर्गुणों के मध्य तुलसीदास ने सीता के रूप में एक आदर्श नारी की अवधारणा की थी|रामचरित मानस में एक और प्रसंग आता है कि राम के ईश्वर होने को प्रमाणित करने के लिए सती ने भगवान शिव की बात पर अविश्वास कर स्वयं सीता का वेश धारण कर राम की परीक्षा ली थी जिससे कुपित हो उन्होने सती का परित्याग कर दिया क्योकि उन्होने माता सीता का.रुप धरा था जिन्हे पत्नी के रुप में स्वीकार करना संभव नहीं था.यह घटना सिद्ध करती है कि मानस में नारी सदैव पूजिता.सम्माननीया रही है |जैसा कि धीर गंभीर और मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने शापित अहिल्या और ताडका का उद्धार किया था .**रुमा.मंदोदरी.सुलोचना सुरमा** आदि राक्षस कुलीन स्त्रियों को भी न्यायोचित सम्मान दिलाया था|और विवाहिता होते हुए भी राम व लक्ष्मण से विवाह की अनैतिक कामना करने वाली सूर्पनखा को दंड भी दिया था| पारिवारिक संबंधों की गरिमा का सुंदर निर्वाह भी राम की विमाताओं और कौशल्या के बीच प्रगाढ स्नेह व सम्मान भी बनाए रखा|राम वन गमन के प्रसंग में राम ने माता कौशल्या से वन जाने की अनुमति मांगी तो उनका उत्तर नारी की गरिमा और मातृत्व की ऊंचाई को गौरवान्वित करता है --*

जो केवल पिता आयसु ताजा.
तो जनि जाहिर जानि बड माता
जो पितु मातु अयस्क यह दीना..
तो कानन शत अवध समाना|

इस प्रकार मानस की नारियां प्रेम,सद्भावना,करुणा, सहिष्णुता, मर्यादा और प्राणिमात्र के प्रति दया भाव से भी था,वह कर्त्तव्यनिष्ठ , सेवाभावी,नारी भी थी और वात्सल्य, ममत्व, और दया करुणा की साक्षात प्रतिमूर्ति भी, थी, ,वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक सबल मानसिक रुप से सशक्त नारी के रुप में उभर कर सामने आती हैं,

अंतत:तुलसी कृत रामचरितमानस ने नारी की मर्यादा. गरिमा .त्याग व ममत्व को अअक्षुण रखा है .उसके महत्व को.संरक्षित किया है |